वाकाटक राजवंश Vakataka dynasty

वाकाटक राजवंश की स्थापना 255 ई. के लगभग विन्ध्यशक्ति नामक व्यक्ति ने की थी। इसके पूर्वज सातवाहनों के अधीन बरार (विदर्भ) के स्थानीय शासक थे।

The Vakataka dynasty was founded by a person named Vindhyashakti around 255 AD. Its ancestors were the local rulers of Berar (Vidarbha) under the Satavahanas.

विन्ध्यशक्ति के पश्चात उसका पुत्र प्रवरसेन प्रथम (275-335 ई.) शासक हुआ। वाकाटक वंश का वह अकेला ऐसा शासक था जिसने सम्राट की उपाधि धारण की थी। पुराणों से पता चलता है कि इसने चार अश्वमेध यज्ञ किया था।

After Vindhyashakti, his son Pravarsen I (275-335 AD) became the ruler. He was the only ruler of the Vakataka dynasty who assumed the title of emperor. The Puranas reveal that he performed four Ashvamedha Yajnas.

प्रवरसेन के पश्चात वाकाटक साम्राज्य दो शाखाओं में विभक्त हो गया- प्रधान शाखा तथा वासीय (वरसगुल्म) शाखा। दोनों शाखाओं ने समानान्तर रूप से शासन किया।

After Pravarasena, the Vakataka empire was divided into two branches - the Pradhan branch and the Vasiya (Varasagulma) branch. Both the branches ruled parallelly.

प्रधान शाखा के प्रमुख राजा- रूद्रसेन प्रथम (335-360 ई.), प्रभावती गुप्ता का संरक्षण काल (390-410), प्रवरसेन द्वितीय (410-440 ई.) नरेन्द्र सेन (440-460 ई.), पृथ्वीसेन द्वितीय (460-480 ई.)

Major kings of the main branch- Rudrasen I (335-360 AD), patronage period of Prabhavati Gupta (390-410), Pravarsen II (410-440 AD), Narendra Sen (440-460 AD), Prithvisen II (460-480 AD)

गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने अपनी पुत्री प्रभावती गुप्ता का विवाह वाकाटक नरेश रूद्रसेन द्वितीय से किया। वाकाटकों का राज्य गुप्त एवं शक राज्यों के बीच था। राज्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त-II ने इस संबंध को स्थापित किया था।

Gupta ruler Chandragupta II married his daughter Prabhavati Gupta to Vakataka king Rudrasen II. The Vakataka kingdom was situated between the Gupta and Shaka kingdoms. Chandragupta II established this relationship to conquer the kingdoms.

बिवाह के कुछ समय बाद रूद्रसेन द्वितीय की मृत्यु हो गई। चूँकि उसके दोनों पुत्र दिवाकर सेन एवं दमोदर सेन अवयस्क थे, अतः प्रभावतीगुप्ता ने शासन संभाला। यह काल वाकाटक गुप्त संबंध का स्वर्णकाल रहा।

Rudrasen II died some time after the marriage. Since both his sons Diwakar Sen and Damodar Sen were minors, Prabhavati Gupta took over the rule. This period was the golden period of Vakataka Gupta relationship.

प्रभावतीगुप्ता के संरक्षण काल के बाद उसका कनिष्ठ पुत्र दमोदर सेन प्रवरसेन द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठा।

After the tutelage of Prabhavati Gupta, her younger son Damodar Sen ascended the throne as Pravarasena II.

पृथ्वीसेन-II वाकाटकों की प्रधान शाखा का अंतिम शासक था। उसके बाद उसका राज्य बासीम शाखा के हरिषेण के हाथों में चला गया।

Prithvisena-II was the last ruler of the main branch of the Vakatakas. After him his kingdom passed into the hands of Harishena of the Basim branch.

बासीम शाखा के वाकाटक Vakatakas of the Basim branch

वाकाटक वंश की इस शाखा की स्थापना 330 ई. में सम्राट प्रवरसेन के छोटे पुत्र सर्वसेन ने की थी। उसने वत्सगुल्म नामक स्थान पर एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। वत्सगुल्म महाराष्ट्र के अकोला जिले में आधुनिक बासीम में स्थित था।

330 - 331

This branch of the Vakataka dynasty was founded in 330 AD by Sarvasena, the younger son of Emperor Pravarasena. He established an independent kingdom at a place called Vatsagulma. Vatsagulma was located in modern Basim in Akola district of Maharashtra.

वासीम शाखा के प्रमुख राजा सर्वसेन, विन्ध्यशक्ति द्वितीय (350- 400 ई.), प्रवरसेन द्वितीय (400-415 ई.), हरिषेण (475-510ई.)

The prominent kings of the Wasim branch were Sarvasena, Vindhyashakti II (350-400 AD), Pravarsen II (400-415 AD), Harishena (475-510 AD).

हरिषेण बासीम शाखा का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक था। यह वाकाटक वंश का अंतिम ज्ञात शासक है।

Harishena was the most powerful ruler of the Basim branch. He is the last known ruler of the Vakataka dynasty.

वाकाटक वंश के राजा प्रवरसेन द्वितीय ने मराठी प्राकृतकाव्य सेतुबन्ध की रचना की तथा सर्वसेन ने हरिविजय नामक प्राकृत काव्य-ग्रंथ लिखा। संस्कृत की वैदर्भी शैली का पूर्ण विकास वाकाटक नरेशों के दरवार में हुआ।

King Pravarsen II of the Vakataka dynasty composed the Marathi Prakrit poem Setubandh and Sarvasena wrote a Prakrit poem called Harivijay. The Vaidarbhi style of Sanskrit was fully developed in the court of the Vakataka kings.

कुछ विद्वानों का मत है कि चन्द्रगुप्त द्वितीय के राजकवि कालिदास ने कुछ समय तक प्रवरसेन द्वितीय की राजसभा में निवास किया था। वहाँ उन्होंने उसके सेतुबन्ध का संशोधन किया तथा वैदर्भी शैली में अपना काव्य मेघदूत लिखा।

Some scholars believe that Kalidas, the court poet of Chandragupta II, lived in the court of Pravarsen II for some time. There he revised his bridge and wrote his poem Meghdoot in the Vaidarbhi style.

वाकाटक नरेश ब्राह्मण धर्मावलंबी थे। वे शिव व विष्णु के उपासक थे।

The Vakataka kings were followers of Brahmin religion. They were worshippers of Shiva and Vishnu.

वाकाटक नरेश पृथ्वीसेन द्वितीय के सामन्त व्याघ्रदेव ने नचना के मंदिर का निर्माण करवाया।

Vyadhradeva, a feudatory of Vakataka king Prithvisena II, built the temple of Nachna.

अजन्ता का सोलहवां तथा सत्रहवां गुहा विहार और उन्नीसवें गुहा चैत्य का निर्माण वाकटकों के शासन काल में हुआ।

The sixteenth and seventeenth cave viharas and the nineteenth cave chaitya of Ajanta were built during the reign of the Vakatakas.

पागलपंथ विद्रोह

बंगाल ✓ (असम) ✗

नील विद्रोह ✗

नील आंदोलन ✓

Reasoning - 1 बजे

Maths → 2 बजे

GS → 4 बजे

सूफी आन्दोलन Sufi Movement

अबू हाशिम ने सबसे पहले सूफी शब्द का प्रयोग किया था।

Abu Hashim first used the word Sufi.

जो लोग सूफी संतों से शिष्यता ग्रहण करते थे, उन्हें मुरीद कहा जाता था। सूफी जिन आश्रमों में निवास करते थे, उन्हें खानकाह या मठ कहा जाता था।

Those who accepted discipleship from Sufi saints were called Murids. The ashrams where Sufis lived were called Khanqahs or monasteries.

सूफियों के धर्मसंघ बा-शारा (इस्लामी सिद्धान्त के समर्थक) और बे-शारा (इस्लामी सिद्धान्त से बँधे नहीं) में विभाजित थे।

The Sufi sects were divided into Ba-Shara (supporters of Islamic doctrine) and Be-Shara (not bound by Islamic doctrine).

भारत में चिश्ती एवं सुहरावर्दी सिलसिले की जड़ें काफी गहरी थीं।

The Chishti and Suhrawardi sects had deep roots in India.

ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में चिश्ती सिलसिला की शुरुआत की। चिश्ती सिलसिला का मुख्य केन्द्र अजमेर था।

Khwaja Muinuddin Chishti started the Chishti Silsila in India. The main centre of the Chishti Silsila was Ajmer.

चिश्ती सिलसिला के कुछ अन्य महत्वपूर्ण संत थे-निजामुद्दीन औलिया, बाबा फरीद, बख्तियार काकी एवं शेख बुरहानुद्दीन गरीब। बाबा फरीद बख्तियार काकी के शिष्य थे।

Some other important saints of the Chishti Silsila were Nizamuddin Auliya, Baba Farid, Bakhtiar Kaki and Sheikh Burhanuddin Garib. Baba Farid was a disciple of Bakhtiar Kaki.

बाबा फरीद की रचनाएँ गुरुग्रंथ साहिब में शामिल हैं।

Baba Farid's compositions are included in the Guru Granth Sahib.

बाबा फरीद के दो महत्वपूर्ण शिष्य थे- निजामुद्दीन औलिया एवं अलाउद्दीन साबिर।

Baba Farid had two important disciples - Nizamuddin Auliya and Alauddin Sabir.

हजरत निजामुद्दीन औलिया ने अपने जीवनकाल में दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा था। इनके प्रमुख शिष्य थे- शेख सलीम चिश्ती, अमीर खुसरो, अमीर हसन देहलवी ।

Hazrat Nizamuddin Auliya witnessed the rule of seven Sultans of Delhi in his lifetime. His main disciples were Sheikh Salim Chishti, Amir Khusro, Amir Hasan Dehlvi.

शेख बुरहानुद्दीन गरीब ने 1340 ई. में दक्षिण भारत के क्षेत्रों में चिश्ती सम्प्रदाय की शुरुआत की और दौलताबाद को मुख्य केन्द्र बनाया।

Sheikh Burhanuddin Garib started the Chishti sect in the areas of South India in 1340 AD and made Daulatabad the main centre.

सूफियों के सुहरावर्दी धर्मसंघ या सिलसिला की स्थापना शेख शिहाबुद्दीन उमर सुहरावर्दी ने की, किन्तु 1262 ई. में इसके सुदृढ़ संचालन का श्रेय शेख बदरुद्दीन जकारिया को है।

The Suhrawardi order of Sufis was founded by Sheikh Shihabuddin Umar Suhrawardi, but the credit for its strong functioning in 1262 AD goes to Sheikh Badruddin Zakaria.

इन्होंने सिंध एवं मुल्तान को मुख्य केन्द्र बनाया। सुहरावर्दी धर्मसंघ के अन्य प्रमुख संत थे-जलालुद्दीन तबरीजी, सैय्यद सुर्ख जोश, बुरहान आदि। सुहरावर्दी सिलसिला ने राज्य के संरक्षण को स्वीकार किया था।

He made Sindh and Multan the main centers. Other prominent saints of the Suhrawardi order were Jalaluddin Tabrizi, Syed Surkh Josh, Burhan etc. The Suhrawardi order had accepted the patronage of the state.

शेख अब्दुल्ला सत्तारी ने सत्तारी सिलसिले की स्थापना की थी। इसका मुख्य केन्द्र बिहार था।

Sheikh Abdullah Sattari founded the Sattari Silsila. Its main centre was Bihar.

कादरी धर्मसंघ या सिलसिला की स्थापना सैय्यद अबुल कादिर अल जिलानी ने बगदाद में की थी। भारत में इस सिलसिला के प्रवर्तक मुहम्मद गौस थे। इस सिलसिले के अनुयायी गाने-बजाने के विरोधी थे। ये लोग शिया मत के विरुद्ध थे।

The Qadri sect or Silsila was founded by Sayyid Abul Qadir al Jilani in Baghdad. The founder of this Silsila in India was Muhammad Gaus. The followers of this Silsila were against singing and playing music. These people were against the Shia faith.

राजकुमार दारा (शाहजहाँ का ज्येष्ठ पुत्र) कादिरी सिलसिला के मुल्लाशाह का शिष्य था।

Prince Dara (the eldest son of Shah Jahan) was a disciple of Mullah Shah of the Qadiri Silsila.

नक्शबन्दी धर्मसंघ या सिलसिला की स्थापना ख्वाजा उबेदुल्ला ने की थी। भारत में इस सिलसिला की स्थापना ख्वाजा बकी बिल्लाह ने की थी। भारत में इसके व्यापक प्रचार का श्रेय बकी बिल्लाह के शिष्य अकबर के समकालीन 'शेख अहमद' सरहिन्दी को था।

The Naqshbandi sect or Silsila was founded by Khwaja Ubaidullah. In India, this Silsila was founded by Khwaja Baqi Billah. The credit for its widespread propagation in India goes to Baqi Billah's disciple and Akbar's contemporary 'Sheikh Ahmad' Sirhindi.

फिरदौसी, सुहरावर्दी सिलसिला की ही एक शाखा थी, जिसका कार्य-क्षेत्र बिहार था। इस सिलसिले को शेख शरीफउद्दीन याह्या ने लोकप्रिय बनाया। याह्या ख्वाजा निजामुद्दीन के शिष्य थे।

Firdausi was a branch of the Suhrawardi Silsila whose area of work was Bihar. This Silsila was made popular by Sheikh Sharifuddin Yahya. Yahya was a disciple of Khwaja Nizamuddin.